DR. SUMAN LAL RAY
Assistant professor
(Guest faculty)
S.R.A.P. college, Bara chakia, East champaran
(Deptt. of Sanskrit)
B.R.A.B.U. Muzaffarpur

B.A. (Hons.), part—II

Subject — Sanskrit

paper — IV

7×2 = 14 Marks

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (प्रथमोऽङ्कः)

संस्कृत श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद

1

ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने बद्धदृष्टिः
पश्चार्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद् भूयसा पूर्वकायम् ।
दर्भैरर्धावलीढैः श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः कीर्णवर्त्मा
पश्योदग्रप्लुतत्वाद्वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति ॥
(अभि० 1/7)

अनुवाद:-

यह (मृग) हमारे रथ की ओर गर्दन घुमा-घुमाकर मनोहरपूर्वक देखता हुआ बाण लगने की आशंका से अपने पीछे के भाग (पीठ) को शरीर के पूर्वभाग (गर्दन) की ओर समेटकर आधे चबाए हुए कुश के ग्रासों को परिश्रम के कारण खुले हुए अपने मुख से मार्ग में गिराता हुआ आकाश में छलांग मारता हुआ दौड़ ही रहा है। जमीन पर तो इसके पैर कभी-कभी पड़ते हैं।